पेन्टाटयूक

अध्याय 9

कुलपिता याकूब

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1

संरचना और विषय वस्तु 1

संघर्ष की शुरुआत (उत्पत्ति 25:19-34) 3

संघर्ष का अंत (उत्पत्ति 35:16) 5

इसहाक और पलिश्ती लोग (उत्पत्ति 26:1-33) 6

याकूब और कनानी लोग (उत्पत्ति 33:18 – 35:15) 6

शत्रुतापूर्ण अलगाव (उत्पत्ति 26:34 – 28:22) 7

शांतिपूर्ण अलगाव (उत्पत्ति 32:1 – 33:17) 7

लाबान के साथ बिताया समय (उत्पत्ति 29:1 – 31:55) 8

प्रमुख विषय 9

इस्राएल के लिए परमेश्वर का अनुग्रह 10

वास्तविक अर्थ 10

वर्त्तमान प्रासंगिकता 12

परमेश्वर के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्यता 13

वास्तविक अर्थ 13

वर्तमान प्रासंगिकता 15

इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषें 16

वास्तविक अर्थ 16

वर्तमान प्रासंगिकता 17

इस्राएल के माध्यम से अन्य लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषें 18

वास्तविक अर्थ 18

वर्त्तमान प्रसांगिकता 20

उपसंहार 20

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पेन्टाटच्यूक

अध्याय नौ

कुलपिता याक़ूब

प्रस्तावना

क्या आपका कभी भी ऐसे लोगों से सामना हुआ है जो इतने धोखेबाज हैं की उनसे कोई आशा रखना ही व्यर्थ है? भले ही उनके धोखे और बेईमानी उन्हें क्षणिक लाभ पहुंचा सकते हैं — परन्तु अंत में अक्सर ये उन्हें और भी बदतर बना देते हैं। लेकिन ख़ुशी की बात यह है कि, ऐसे लोग भी परमेश्वर की पहुँच से बाहर नहीं हैं। जब कभी वह उनका विशेष रूप से उपयोग करना चाहे, वह उन तक पहुँच जाता हैं।

परमेश्वर उनके जीवनों में कठिनाइयों को लाने के द्वारा उन्हें एक नए मनुष्य के रूप में बदलता है जो दीन हों और उसकी सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहे। ज्यादातर लोग जिन्हें परमेश्वर ऐसे बुलाता है वे अंत में दूसरों के लिए दीनता और विश्वास में आदर्श और उदहारण का कारण ठहरते हैं।

यह पाठ पेन्टाटच्यूक के उस हिस्से पर अपना पूर्ण ध्यान केन्द्रित करता है, जो बाइबल के सबसे धोखेबाज पुरुषों में से एक का जिक्र करता है, "कुलपिता याकूब।" लेकिन, जैसा कि हम देखेंगे, उत्पत्ति 25:19-37:1 का यह भाग, न केवल यह उजागर करता है कि याकूब कितना धोखेबाज था, लेकिन यह भी कि कैसे परमेश्वर ने उसे दीन किया और उसे इस्राएल के उन कुलपिता में से एक बनाया जिनकी सर्वाधिक सराहना की गयी हो।

दूसरे पाठों में, हमने देखा है कि उत्पत्ति की पुस्तक को तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला भाग 1:1-11:9 में अतिप्राचीन इतिहास है। यहां मूसा ने समझाया कि प्रतिज्ञा के देश के लिए इस्राएल की बुलाहट किस तरह से संसार के इतिहास के प्रारंभिक चरणों पर आधारित थी। दूसरे भाग 11:10 – 37:1 में आरम्भ में हुए सभी कुलपिता के इतिहास को शामिल किया गया है। इस भाग में, मूसा ने स्पष्ट किया कि अब्राहम, इसहाक और याकूब के जीवन की पृष्ठभूमि की तुलना में प्रतिज्ञा किए हुए देश की यात्रा को कैसे देखना था। तीसरे भाग 37:2 – 50:26 में बाद में आने वाले कुलपिता का इतिहास है। इन पदों में, इस्राएल जब प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर बढ़ रहा था, तब उनकी जातियों के बीच उठे मुद्दों को संबोधित करने के लिए मूसा ने यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी बताई।

कुलपिता याकूब का इतिहास दूसरे भाग का हिस्सा है; वह प्रारंभिक कुलपिता का इतिहास जो इस्राएल के तीन प्रसिद्ध कुलपिता के बारे में बात करता है: अर्थात अब्राहम, इसहाक और याकूब। इसहाक के जीवन की घटनाओं को अध्याय 11:10-25:18 में अब्राहम के रिकॉर्ड के साथ और 25:19-37:1 में याकूब के रिकॉर्ड के साथ भी जोड़ा गया है। इसलिए, इस पाठ में, हम इस भाग के दूसरे भाग पर ध्यान केंद्रित करेंगे अर्थात याकूब का जीवन।

कुलपिता याकूब पर हमारा पाठ दो मुख्य भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले, हम उत्पत्ति के इस हिस्से की संरचना और विषय वस्तु की जांच करेंगे। फिर हम प्रमुख विषयों को देखेंगे जिन पर मूसा ने अपने मूल दर्शकों को ध्यान में रखते हुए, जोर दिया, और कैसे ये विषय आधुनिक मसीहों पर लागू होते हैं। आइए याकूब की कहानी की संरचना और उसके विषय वास्तु के साथ प्रारंभ करते हैं।

संरचना और विषय वस्तु

बाइबल के अधिकांश छात्र याकूब के जीवन की घटनाओं से परिचित हैं। लेकिन हमारे पाठ में इस बिंदु पर, हम यह देखना चाहते है कि कैसे मूसा ने उत्पत्ति की पुस्तक में इन घटनाओं के वृतांतों को

व्यवस्थित किया। ध्यान में रखें कि, जब हम पवित्र शास्त्रों को पढ़ते हैं, तो हमें दो सवाल पूछना चाहिए पहला कि वे क्या कहते हैं और दूसरा कि वे इसे कैसे कहते हैं। दूसरे शब्दों में, हर अध्याय में लिखी बात और उसकी संरचना कैसे एक साथ काम करती हैं? इस रिश्ते को समझने के द्वारा हमें उन बाइबल के लेखकों के उद्देश्यों को समझने में मदद मिलती है जो उनके मूल श्रोताओं के लिए बनाये गए थे। और यह भी कि उनके लेख को हमारी आधुनिक दुनिया में हमें कैसे लागू करना चाहिए।

उत्पत्ति 25:19-37:1 जैसे लंबे एवं जटिल पवित्र शास्त्र के हिस्से की रूपरेखा बनाने के कई तरीकें हैं। लेकिन, हमारे उद्देश्यों को देखते हुए, हम याकूब के जीवन की कहानी के सात प्रमुख भागों की पहचान करेंगे।

पहला भाग वह है जिसे हम उत्पत्ति 25:19-34 में संघर्ष की शुरुआत कह सकते हैं। यह याकूब और एसाव के बीच नाटकीय रूप से आए संघर्ष को बताती है, और बाद में उनसे जो जातियां निकली। यह संघर्ष याकूब के जीवन भर पूरी तीव्रता से बढ़ता और घटता रहता है। इस प्रथम भाग के अंत में याकूब और एसाव से ध्यान हटाकर उनके पिता इसहाक पर केन्द्रित किया गया है तथा उसे एक नायक के रूप में चिह्नित किया गया है।

दूसरा भाग 26:1-33 में इसहाक और पलिश्तियों के बीच शांतिपूर्ण व्यवहारों की ओर बढ़ता है। यह भाग एसाव और याकूब को मुख्य पात्रों के रूप में वापस लाने के साथ समाप्त होता है।

तीसरा भाग 26:34-28:22 में, याकूब और एसाव की शत्रुतापूर्ण अलगाव के बारे में बताता है। यह भाग याकूब का प्रतिज्ञा किए हुए देश से बाहर निकलने और लाबान और अपने रिश्तेदारों के पास जाने को दर्शाते हुए समाप्त होता है।

29:1 – 31:55 में चौथा भाग लाबान के साथ याकूब के बिताए गए समय का वर्णन करता है। जब याकूब प्रतिज्ञा किए हुए देश को लौटता है तो इस भाग का अंत होता है।

पांचवा भाग याकूब और एसाव के शांतिपूर्ण अलगाव को बताता है जब 32:1 – 33:17 में याकूब प्रतिज्ञा किए हुए देश को लौटता है। फिर यह भाग एसाव से हटकर कनानियों के साथ याकूब के संघर्षो पर आता है।

33:18 – 35:15 में छठा भाग याकूब और कनानियों के आमने सामने आने पर ध्यान केंद्रित करता है। और अंत में यह ध्यान यहाँ से हटकर याकूब के वंश की ओर जाता है।

अंत में, याकूब के जीवन का सातवें भाग 35:16 – 37:1 में भाइयों के मध्य चले आ रहे लम्बे संघर्ष की समाप्ति का वर्णन है।

कई टीकाकारों ने ध्यान दिया है कि याकूब के जीवन की ये बुनियादी रूपरेखा एक बड़े पैमाने वाले व्यत्यासिका को बनाती है:

> **एक साहित्यिक संरचना जिसमें बीच वाले भाग से पहले और उसके बाद का भाग एक दूसरे के समानांतर होता है या एक दूसरे को संतुलित करता है।**

> जब कभी आप किसी भाग या पुराने नियम के हिस्से पर चर्चा करते हैं तो आप को ध्यान में रखना है **कि दुर्लभ अपवाद के अलावा,** बाइबल के लेखकों ने अपनी कहानियों, या अपनी कविताओं और उन्हीं के समान किसी भी अन्य लेख को किसी रूपरेखा को ध्यान में रखकर नहीं लिखा था। जैसे कि, ऐसा नहीं है कि लेखक कहे "अब मैं भाग एक पर हूँ। अब मैं भाग दो पर हूँ। अब मैं भाग तीन पर हूँ। इसके बजाय, हम जो बात कर रहे हैं वह यह है कि व्याख्याकार उन ग्रंथों को देख रहे हैं जो लिखे गए थे और ऐसे पैटर्न की खोज कर रहे हैं जिनकी पहचान की जा सके, जिसका अर्थ है कि संरचना और तार्किक संबंधों का विश्लेषण करने के लिए हर एक रूपरेखा कुछ मानदंडों का उपयोग कर रही है। और जिस मानदंड

> का आप उपयोग करेंगे उसके आधार पर आप भिन्न-भिन्न रूपरेखा बनाएंगे। अच्छा तो, एक तरीका जिसका आप उपयोग कर सकते हैं वह है पहले भागों और बाद आने वाले भागों के बीच संतुलन, या प्रतिध्वनि, या प्रतिबिंब, या समानताएं बनाना... लेकिन जब आप और भी विस्तृत समानताएं पाते हैं — जैसे कि याक़ूब के मामले में पहले भाग और पिछले भाग के बीच देखा जा सकता है — तब आप इस बिन्दु पर आते है जहां, यदि आपके पास पर्याप्त समानताएं हैं, तो आप वास्तव में इसे "**सुविचारित व्यत्यासिका**," कह सकते हैं, जहां लेखक इस संदर्भ में सोच रहा है कि, "मैंने यह किया है, मैंने यह किया है, मैंने यह पहले भाग में किया; अब मैं वह करने जा रहा हूँ जिनका थोड़ा संबंध पहले के भागों से है "... और उन सहसंबंधों के कारण जो उस प्रकार की संरचना में आते हैं, आपके पास सहसंबंध बनाते हुए भागों की तुलना और विरोधाभास करने का मौका होता है। और जब याक़ूब की कहानी की बात होती हैं तो यह मूल्यवान बात है। याक़ूब के जीवन के शुरुआती हिस्से याक़ूब के जीवन के बाद के हिस्सों से सहसंबंधित हैं। और जब आप उन सहसंबंधों को देखते हैं-जिनमें दोनों विरोधाभास और तुलनाएं शामिल हैं- जब आप उन दोनों को एक साथ देखते हैं और वे इन विभिन्न भागों के बीच उठते हैं, तब आपके पास यह देखने का अवसर होता है कि एक लेखक के रूप में मूसा उन दोनों भागों पर जोर दे रहा है। तुलनाएं और विरोधाभास, किसी व्यत्यासिका के महत्व को समझने की यही कुंजी है।
>
> डॉ. रिचर्ड एल. प्रैट, जूनियर

जैसा कि हमने अभी देखा है, याक़ूब की कहानी में पहला भाग दो भाइयों, याक़ूब और एसाव के बीच के संघर्ष की शुरुआत को दर्शाता है। इस भाग को, सातवें और अंतिम खंड में उनके संघर्ष की समाप्ति को दर्शाने के द्वारा संतुलित किया गया हैं। दोनों भाग न केवल भाइयों के बीच संघर्ष की बात कर रहे हैं, लेकिन उन देशों के बारे में भी जो उनसे निकले थे।

दूसरा भाग इसहाक और पलिश्तियों के साथ उसके संपर्कों पर केंद्रित है। यह छठे भाग के अनुरूप है जहां हम याक़ूब और कनानियों के साथ उसके सम्पर्कों को देखते हैं। ये भाग एक दूसरे को संतुलित करते हैं क्योंकि वे दोनों उन मुठभेड़ों का वर्णन करते हैं जो कि प्रतिज्ञा किए हुए देश में कुलपिता और अन्य समूहों की बीच घटित हुआ था। तीसरा भाग याक़ूब और एसाव की शत्रुतापूर्ण अलगाव का वर्णन करता है। यह पांचवें भाग के साथ संतुलित होता है जहाँ हम याक़ूब और एसाव के शांतिपूर्ण अलगाव के बारे में पढ़ते है। दोनों भाग उस समय के परिवेश और उन गतिशीलताओं पर केंद्रित हैं जब भाइयों ने अलग-अलग रास्ते अपना लिए थे। और अंत में, चौथा भाग लाबान के साथ याक़ूब के समय का वर्णन करता है। यह भाग व्यत्यासिका की संरचना के केंद्र, या काज, के रूप में अकेले खड़ा है। जैसे कि, यह याक़ूब की कहानी के नाटक में एक प्रमुख बिन्दु को बनाता है।

इस व्यापक सममित डिजाइन को ध्यान में रखते हुए, हम प्रत्येक युग्मित भाग की तुलना और विरोधाभास के द्वारा मूसा की सामग्री की जांच करेंगे। सुविधा के लिए, हम दो सबसे बाहरी भागों के साथ शुरू करेंगे और केंद्रीय भाग की ओर अपने कार्य को करेंगे। आइए उत्पत्ति 25:19-34 में भाइयों के संघर्ष की शुरुआत के साथ आरम्भ करते हैं।

संघर्ष की शुरुआत (उत्पत्ति 25:19-34)

इस भाग में तीन साधारण वृत्तांत शामिल हैं जो बताते हैं कि भाइयों के बीच संघर्ष किस तरह शुरू हुआ। पहला वृतांत 5:19-23 में जुड़वां भाइयों के जन्म से पहले घटित होता है। यह बताता है कि जुड़वा

भाई अपनी मां के गर्भ में लड़ते थे। उत्पत्ति 25:23 को सुनिए, जहां परमेश्वर इनके जन्म से पूर्व ही इस संघर्ष के बारे में रिबका को बताता है:

> तेरे गर्भ में दो जातियां हैं, और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के लोग अलग-अलग होंगे, और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे, और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा (उत्पत्ति 25:23)।

जैसा कि हम देखते हैं, परमेश्वर ने कहा कि याकूब और एसाव के बीच का संघर्ष, भाइयों के बीच आमतौर पर होने वाले व्यक्तिगत संघर्ष से कहीं बढ़कर था। यह "दो जातियों" या "दो राज्य के लोगों" के बीच होने वाले संघर्ष का पूर्वानुमान था। तो, परमेश्वर के मन में कौन से दो राष्ट्र थे? इस खंड के दूसरे और तीसरे भाग में हमको इसका उत्तर मिलेगा।

25:24-26 में दूसरा वृत्तांत जन्म के समय भाइयों के संघर्ष के बारे में हमें बताता है। यह छोटा अध्याय उन दो राष्ट्रों की पहली पहचान के रूप में हमारे सामने आता है जिसका ज़िक्र आरम्भ में किया गया था । उत्पत्ति 25:25 पहले जन्में बच्चे एसाव का वर्णन, जन्म के समय "लाल" होने के रूप में करता है। जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद "लाल" किया गया वह *אַדְמוֹנִי* (अदमोनी) है। यह शब्दावली चतुराई से खेले गए शब्दों के खेल को दिखाती है क्योंकि यह शब्द *אֱדוֹם* या एदोम के रूप में इब्रानी शब्दों के एक ही परिवार से निकला है। इसने संकेत दिया है कि एसाव एदोम राष्ट्र का पूर्वज है। हम उत्पत्ति 25:26 में दूसरे राष्ट्र के बारे में पढ़ते हैं, जहां दूसरे बेटे को याकूब कहा गया है। जाहिर है, याकूब, इस्राएल राष्ट्र का सुविख्यात पिता था।

तीसरा वृत्तांत 25:27-34 में युवा वयस्कों के रूप में याकूब और एसाव के बीच पाई जाने वाली प्रतिद्वंद्विता को हम देख सकते है। इन पदों में याकूब ने, एसाव को "लाल दाल," या *אָדֹם* (एदोम) का प्रलोभन देकर पहिलौठेपन का अधिकार बेचने के लिए लुभाया था। यह इब्रानी शब्द जन्म के समय एसाव के "लाल" रंग को पुनः यहाँ दोहराता है। और उत्पत्ति 25:30 स्पष्ट रूप से ध्यान देता है कि यही कारण है कि एसाव को "एदोम" भी कहा जाता था।

जैसा कि हमने अभी देखा, शुरू से ही मूसा ने अपनी कहानी की ओर एक महत्वपूर्ण अभिविन्यास को अपने श्रोताओं को प्रदान किया था। उसके श्रोता जानने वाले थे कि याकूब और उसके भाई एसाव के बीच क्या हुआ था। लेकिन यह संघर्ष सिर्फ दो भाइयों के बीच होने वाले संघर्ष से कुछ ज्यादा ही था। ये दोनों भाई दो राष्ट्रों, इस्राएल और एदोम के मुखिया थे, और इस तरह से, उनके व्यक्तिगत संघर्ष इन दोनों राष्ट्रों में उनके वंशजों के बीच संघर्ष के पूर्वाभास थे।

> जब हम कूटनीतिक संबंधों के बारे में सोचते हैं, तो राजनीतिक परस्परच्छेद, इस्राएल और एदोम के बीच सीमा... यह एक ऐसा रिश्ता है जो आनंदायक नहीं है.. यहां तक कि जब वे रिबका के गर्भ में हैं, तब भी वे लड़ रहे है और फिर एक बालक दूसरे की जगह लेने की कोशिश कर रहा हैं। बेशक, एसाव पहले बाहर आता है; तो वह जेठा है। लेकिन याकूब उसके ठीक पीछे है और वह उसे हटा कर स्वयं आना चाहता है, जैसा उसका नाम है। याकूब "चालाकी से दूसरे का स्थान लेने वाला है," ठीक? "वह जो कपट से दूसरे का स्थान लेता है।" और इस तरह, यही उनकी पृष्ठभूमि है। और जब वे, बहुत छोटे लड़के थे — तो दोनो बहुत अलग स्वभाव वाले थे — याकूब को तम्बू में रहना और खाना और घर में रहना पसंद है और एसाव शिकारी है, ठीक है ना? लेकिन याकूब वह चाहता है जो एसाव के पास है, जो कि पहिलौठेपन का अधिकार। इसलिए वह उसके लिए खाना बनाता है। एसाव मैदान से घर आता है और वह बहुत भूखा है, तब वह अपने भाई के साथ यह मूर्खतापूर्ण सौदा करता है। और याकूब एसाव से कहता है, "तुम्हें पता है क्या? मैं अभी तुम्हारे लिए एक अच्छा भोजन तैयार करने जा रहा

> हूँ और क्या तुम मुझे उसके बदले अपने पहिलौठेपन का अधिकार दे सकते हो।" वह पुरुष इतना भूखा है, वह कहता है, "ज़रूर, मैं ऐसा ही करूँगा।" और फिर उसे पता चलता है कि क्या हुआ है और तब याकूब अपने पिता से आशीष लेना चाहता है। और अपनी ही मां के साथ मिलकर, याकूब एसाव होने का दिखावा करता है। और एसाव, जैसा की आपको पता है, "वह लम्बा-चौड़ा"- बालों वाला आदमी है, ठीक है ना? और इस तरह, याकूब अपनी बाहों पर कुछ खाल लगाता है और अन्दर चला जाता है और एसाव होने का दिखावा करता और परिवार के कुलपिता से आशीर्वाद माँगता है। और इसहाक कहता है, "ठीक है, तुम आशीर्वाद ले सकते हो।" इस तरह, सब तरह से, एसाव से उसका अधिकार धोके से छीन जाता है। और इसलिए, बेशक यह घटना आपस में कटुता को पैदा करती है। और फिर याकूब को इसलिए भागना पड़ता है क्योंकि उसे अपने भाई के द्वारा मारे जाने का खतरा था। यह दोनों भाइयों के बीच एक अच्छा रिश्ता नहीं है.. । और तब यह और भी बढ़ जाता है जब वे दो अलग-अलग राष्ट्र बन जाते हैं; वे एक दूसरे से नफरत करते हैं। और उनका इतिहास इस बात को प्रमाणित करता है।
>
> डॉ. टॉम पेटर

पहले भाग में याकूब, एसाव और उनके वंशजों पर यह ध्यान-केंद्रण सातवें या अंतिम भाग को समझने में हमारी मदद करता है, 35: 16 – 37:1 में भाइयों के संघर्ष का अंत।

संघर्ष का अंत (उत्पत्ति 35:16)

इस भाग में, मूसा ने एक बार फिर याकूब और एसाव और उन दो राष्ट्रों पर ध्यान केंद्रित किया है जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। उसने ऐसा तीन भागों में किया था। सबसे पहले, उत्पत्ति 35:16-26 में उसने याकूब के वंश को दर्ज किया। यह भाग सविस्तार बताता है कि कैसे याकूब के वंशजों ने इस्राएल देश का गठन किया। यह बिन्यामीन और रूबेन के बारे में छोटी सी टिप्पणियों को शामिल करता है और इस्राएल के बारह गोत्रों के कुलपिता की एक सूची के साथ समाप्त होता है।

दूसरा, मूसा उत्पत्ति 35:27-29 में इसहाक की मृत्यु पर याकूब और एसाव के व्यवहार का वर्णन करता है। छोटा सा यह अध्याय बताता है कि दोनों एसाव और याकूब ने इसहाक को दफनाया था। इस रिपोर्ट की मार्मिकता तब स्पष्ट होती है जब हम याद करते हैं कि उत्पत्ति 27:41 में एसाव ने अपने पिता की मौत होने पर याकूब को मारने की धमकी दी थी। इस प्रकाश में इसहाक की मृत्यु का विवरण संकेत देता है कि भाइयों के बीच संघर्ष समाप्त हो गया था।

तीसरा, उत्पत्ति 36:1-43 में मूसा ने एसाव के वंशजों का एक विस्तृत विवरण दिया। यह विवरण दो वंशावलियों को जोड़ता है जो एसाव की वंशजों के विभिन्न भागों की रिपोर्ट देता है। यह भाग सेईर के क्षेत्र में शासन करने वाले राजाओं के साथ समाप्त होता है। फिर मूसा ने 37:1 में एक अंतिम बात यह कही कि याकूब कनान के देश में रहना जारी रखता है। इस तरह से एसाव के वंश को समाप्त करके, मूसा ने यह स्पष्ट कर दिया कि, यद्यपि याकूब और एसाव के बीच संघर्ष समाप्त हो चुका था, भाई अब अलग हो गए थे। याकूब के वंशज कनान में रहते थे और एसाव के वंशज एदोम में रहते थे।

याकूब के जीवन के पहले और आखिरी भाग की सामग्री को ध्यान में रख कर, आइये हम मूसा की कहानी के केंद्र की ओर एक कदम आगे बढ़ते हैं, दूसरे और छठे भाग, जो प्रतिज्ञा किए हुए देश और कुलपितायों के मध्य आमना सामना होने से संबंधित है।

इसहाक और पलिश्ती लोग (उत्पत्ति 26:1-33)

ये भाग उत्पत्ति 26:1-33 में, इसहाक और पलिश्तियों के बीच शांतिपूर्ण समागम होने और याकूब और कनानियों के बीच उत्पत्ति 33:18 – 35:15 में शत्रुतापूर्ण मुठभेड़ों के विपरीत हैं। हम दूसरे भाग के साथ शुरु करेंगे जो कि पलिश्तियों के साथ इसहाक और उसके मुठभेड़ों का वर्णन करता है।

अब, कई आलोचनात्माक व्याख्याकारों ने तर्क दिया है कि उत्पत्ति का यह अध्याय ठीक जगह पर नहीं है। हम सब देख सकते है कि यह याकूब के बजाय इसहाक पर ध्यान केंद्रित करता है। और शायद यह सच हो सकता है कि ये घटनाएं याकूब और एसाव के जन्म से पहले हुई हो। लेकिन जैसा कि हम देखेंगे, याकूब के जीवन परलिखा यह भाग मूसा के ध्यान-केंद्रण के लिए महत्वपूर्ण है।

यह लेख दो घटनाओं में विभाजित होती है, जिनमे काफी करीबी सम्बन्ध देखे जा सकते है। पहला वृत्तांत 26:1-11 में पलिश्तियों और इसहाक के मध्य स्थापित हुई प्रारंभिक शांति का वर्णन करता है। इन पदों में इसहाक ने पलिश्ती राजा अबीमेलेक को धोखा दिया, उसने ऐसा दर्शाया जिससे की राजा को लगा कि रिबका उसकी बहन थी। इसहाक के छल का पता लगने पर, अबीमेलेक ने इसहाक को रिबका लौटा दी। इसके बाद उसने इसहाक को इस क्षेत्र में रहने की अनुमति दे दी और उन्हें किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुंचाने के लिए अपने लोगों को आदेश दिया।

दूसरे वृत्तांत 26:12-33 में पलिश्तियों के साथ इसहाक की स्थाई शांति के बारे में बताता है। इस भाग में, परमेश्वर ने इसहाक को आशीष दी लेकिन उसके पशुओं के कई झुंडों के कारण पलिश्ती लोग उससे ईर्ष्या करने लगे। इसलिए, इसहाक ने हिंसा से परे रहते हुए एक कूएँ से दूसरे कूएँ को चले जाने को ही बेहतर समझा। इस घटना का अंत तब होता है जब अबीमेलेक ने इस बात को ग्रहण किया इसहाक पर परमेश्वर का आशीषमय हाथ है और बेर्शेबा में दोनों ने आपस में शांति की एक संधि बनाई।

पलिश्तियों के साथ इसहाक की शांति की यह कहानी इस तथ्य पर प्रकाश डालती है कि इसहाक, और फिर उसका पुत्र याकूब, अब्राहम के उत्तराधिकारी थे। जब हम अब्राहम के जीवन के साथ इस भाग में लिखी बातों की तुलना करते हैं, तो हमें अब्राहम के जीवन में कई समानताएं देखने को मिलती हैं। उत्पत्ति 20:1-18 में, अब्राहम ने भी एक पलिश्ती राजा के साथ समझौता किया था , जिसका नाम भी अबीमेलेक था। उत्पत्ति 21:30 और 34 में अब्राहम ने कुओं को खोदा और पलिश्तियों के बीच रहा था। 21:22-34 में अब्राहम ने भी बेर्शेबा में पलिश्तियों के साथ एक संधि की थी। सभी संदेह को हटाने के लिए कि परमेश्वर ने पलिश्तियों के साथ इसहाक के शांतिपूर्ण संबंध को मंज़ूरी दी थी इस बात से किसी भी प्रकार के संदेह को हटाने के लिए मूसा ने अब्राहम के साथ इन तुलनाओं को दर्शाया था।

अब आइये पलिश्तियों के साथ इसहाक के संबंधों से हट कर याकूब के जीवन के छठे भाग की ओर बढ़ते हैं, और 33:18-35:15 में ध्यान केन्द्रित करते है जहाँ याकूब का सामना कनानियों से होता है।

याकूब और कनानी लोग (उत्पत्ति 33:18 – 35:15)

कनानियों के साथ याकूब के संघर्ष में भी दो वृत्तांत ऐसे है जो करीबी से जुड़े हैं। पहला वृत्तांत, 33:18 – 34:31 में शकेम में याकूब के संघर्ष से संबंधित है। जब याकूब कनानियों के बीच रहता था, हमोर के बेटे शकेम ने याकूब की बेटी, दीना का यौन-शोषण किया। अपनी बहन पर हुए इस शोषण के जवाब में, याकूब के बेटों ने शकेमवासियों को यह कहकर बरगलाया कि अगर उनका खतना किया जाएगा तो सब कुछ माफ कर दिया जाएगा। लेकिन जब शकेमवासी खतना के द्वारा पीड़ित थे, तो याकूब के बेटों शिमोन और लेवी ने उन पर हमला कर दिया और उन सभी की हत्या कर दी। इसके बाद, याकूब ने डर व्यक्त किया कि कनानी लोग बदला लेने और उसके परिवार को नष्ट करने की कोशिश करेंगे। हालांकि याकूब के बेटों ने जोर देकर कहा कि उन्होंने सही काम किया था, उत्पत्ति 49:5-7 में शिमोन और लेवी के बारे में याकूब के अंतिम शब्द कुछ और ही संकेत देते हैं।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

दूसरे वृत्तांत में, याकूब उत्पत्ति 35:1-15 में बेतेल में काफी नाटकीय ढंग से परमेश्वर से एक आश्वासन को प्राप्त करता है। 35:2-4 में, बेतेल में एक वेदी निर्माण करने के लिए याकूब स्वयं को और अपने पूरे परिवार को पवित्र करता है। नतीजतन, परमेश्वर का क्रोध कनानियों पर पड़ता है जिसके कारण उन्होंने याकूब का पीछा नहीं किया। फिर, जब याकूब ने बेतेल में वेदी बनाई, तो परमेश्वर ने उससे बात की और उसे आश्वासन दिया कि वह अपने पिता का उत्तराधिकारी होगा। हम इसे विशेष रूप से 35:10-12 में देखते हैं जहां 26:3-4 इसहाक के विषय में परमेश्वर के वचन उसके पहले बोले वचनों के समानांतर ही हैं। याकूब द्वारा इस आशीष के लिए धन्यवाद दिए जाने के साथ यह वृत्तांत ख़त्म होता है।

और बहुत कुछ दूसरे भाग के जैसे, हम इन अध्यायों में अब्राहम और याकूब के बीच कई समानताएं देखते हैं। उत्पत्ति 33:20 में, याकूब शकेम में बहुत कुछ जैसे अब्राहम ने उससे पहले उत्पत्ति 12:7 में किया था यहोवा के लिए एक वेदी की स्थापना करता है। इसके अलावा, 35:6-7 में, याकूब शकेम से बेतेल को जाता है और वहां बहुत कुछ जैसे अब्राहम ने उत्पत्ति 12:8 में किया था एक वेदी का निर्माण करता है। जैसा कि दूसरे भाग में है, अब्राहम के जीवन के साथ ये सकारात्मक संबंध बताते हैं कि कनानियों के साथ याकूब के संघर्ष को परमेश्वर ने स्वीकृति दी थी।

अब आइए तीसरे और पांचवें भागों की ओर बढ़ते हैं जो याकूब और एसाव के अलगाव के समयों के बारे में चर्चा करते हैं। ये कहानियाँ दो विभिन्न समयों पर ध्यान केंद्रित करती हैं जब भाईयों ने अपने रास्ते अलग लिए थे। तीसरा भाग 26:34-28:22 में, याकूब और एसाव की शत्रुतापूर्ण अलगाव के बारे में बताता है। और पांचवां भाग उत्पत्ति 32:1–33:17 में याकूब और एसाव के शांतिपूर्ण अलगाव के बारे में वर्णन करता है। आइए याकूब और एसाव की शत्रुतापूर्ण अलगाव पर दृष्टि डालते हैं।

शत्रुतापूर्ण अलगाव (उत्पत्ति 26:34 – 28:22)

यह भाग चार कहानियों पर ध्यान-केंद्रित करता है जो बारी बारी से कभी याकूब तो कभी एसाव के द्वारा इन घटनाओं से जुड़ी नैतिक जटिलताओं को प्रदर्शित करती है। सबसे पहले, 26:34 एक संक्षिप्त रिपोर्ट देता है कि एसाव अपने माता पिता की इच्छाओं के विपरीत हित्ती पत्नियों को ब्याह लेने के द्वारा खुद को लज्जित करता है। दूसरा, 27:1 – 28:5 में, हम एक लंबे वृत्तांत को पढ़ते हैं कि कैसे याकूब के धोखे ने इसहाक के आशीर्वाद को सुरक्षित किया था। इस प्रसिद्ध कहानी में, याकूब ने अपने पिता इसहाक को धोखा देकर एसाव के लिए जो आशीषें उसने राखी थी उसे हासिल किया था। यह जानने पर कि क्या हुआ था, एसाव इतना क्रोधित हो गया कि रिबका को याकूब के जीवन का डर सताने लगा। उसने याकूब को पद्दनराम भेजने के लिए इसहाक को आश्वस्त किया था जहां याकूब अपने रिश्तेदारों के बीच से एक पत्नी को ढूंढ सकेगा। तीसरा, एसाव के मूसा के श्रोता बहुत अधिक सहानुभूति न पनपे इसलिए, मूसा ने 28:6-9 में बताया कि एसाव ने अपने माता पिता की आज्ञाओं को ना मानते हुए इश्माएली स्त्रियों को पत्नी बना लिया था। चौथा और अंतिम भाग 28:10-22 में बेतेल में एक स्वप्न के माध्यम से परमेश्वर ने याकूब को मिलने वाली आशीषों के बारे में बता कर इस बात के पुष्टि करता है कि इसहाक के वारिस के रूप में उसने याकूब को ही चुना है।

शांतिपूर्ण अलगाव (उत्पत्ति 32:1 – 33:17)

तीसरे भाग की कथा जिसमे याकूब और एसाव की शत्रुतापूर्ण अलगाव का वर्णन है, याकूब के जीवन का पांचवां भाग 32:1 – 33:17 इसके विपरीत भाइयों के शांतिपूर्ण रीति से अलग होने की रिपोर्ट देता है। इस भाग में दो वृत्तांत शामिल हैं जो बारीकी से जुड़े है। सबसे पहले, हम 32:1-32 में एसाव के लिए याकूब की तैयारी को देखते हैं। उनकी शत्रुतापूर्ण अलगाव के बरसों बाद, याकूब ने अपने आगे दूतों और उपहारों को भेजकर एसाव से मिलने की तैयारी की। होशे 12:4 के अनुसार, एसाव से मिलने से

पहली वाली रात को, याकूब को दीन बनाया गया था जब उसने एक स्वर्गदूत के साथ कुश्ती लड़ी और परमेश्वर के आशीर्वाद को प्राप्त किया।

> हम देखते हैं कि यह प्रतिज्ञा रिबका से पहले ही करी गई थी कि याकूब वह व्यक्ति होगा जो आशीषों को प्राप्त करेगा लेकिन जिस तरह से याकूब ने आशीषों को प्राप्त किया...उसने अपने पिता को धोखा दिया और जब उससे, उसका नाम पूछा गया तो उसने कहा, "मेरा नाम एसाव है, तेरा जेठा पुत्र।" उसने झूठ बोला... लेकिन परमेश्वर ने उसे आशीष दी; परमेश्वर उसे बढ़ाता है, उसे इतने बच्चे देता है कि अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा पूरी होने लगी है — "जिस तरह से तारे हैं, वैसे ही तेरे वंशज होंगे" — और अब, जब वह प्रतिज्ञा किए हुए देश में वापस लौट रहा है, तो उसे अपने अतीत तक का सामना करना पड़ता है। और इस बार, एसाव से मिलने से पहली वाली रात को, वह एक स्वर्गदूत के साथ कुश्ती ल़ड़ रहा है और उससे पूछा जाता है, "तेरा नाम क्या है?" और इस बार वह सच बोलता है। वह कहता है, "मेरा नाम याकूब है।" और उसे एक नया नाम दिया जाता है, इस्राएल।
>
> डॉ. क्रेग एस. कीनर

33:1-17 में दूसरा वृत्तांत एसाव के साथ याकूब के मेल-मिलाप की रिपोर्ट देता है। इस भाग में, भाई मिलते हैं और फिर शांतिपूर्ण शर्तों पर अलग होते हैं। इस भाग और इसके समानांतर वचनों के बीच विरोधाभासों का होना स्पष्ट जाहिर है। याकूब अब धोखेबाज नहीं बल्कि ईमानदार और दीन व्यक्ति था। एसाव ने अब बदला नहीं लिया लेकिन माफ कर दिया। अंत में, जुड़वां भाइयों के बीच पहले वाली शत्रुता का समाधान हो जाता है और वे शांति से अपने अलग-अलग मार्गों में चले जाते हैं। एसाव के कहानी से गायब होते ही इस भाग का अंत होता है। फिर, अध्याय 34 में, कनानी लोग और एक नई भौगोलिक सेटिंग दिखाई देते हैं। यह सब हमें लाबान के साथ याकूब के समय के चौथे, निर्णायक भाग उत्पत्ति 29:1 – 31:55 में लाते हैं।

लाबान के साथ बिताया समय (उत्पत्ति 29:1 – 31:55)

लाबान के साथ याकूब का समय पांच मुख्य भागों में विभाजित होता है। यह 29:1-14 में पद्नराम में याकूब के आगमन के साथ शुरू होता है। फिर हम 29:14-30 में याकूब को दिए गए लाबान के धोखे के बारे में पढ़ते हैं जब उसने याकूब को अपनी बेटियां शादी में दी थी। याकूब की शादी के बाद, 29: 31 – 30:24 में हम याकूब के बच्चों के जन्म के बारे में पढ़ते हैं, जो इस्राएल के जनजातिय कुलपिता थे। फिर, लाबान के पहले वाले धोखे को संतुलित करने के लिए, 30:25-43 में मूसा ने याकूब द्वारा लाबान को दिए गए धोखे के बारे में बताया जब उसने अपनी कई वर्षों के लिए मजदूरी की मांग की। अंततः, 31:1-55 में, हम पद्नराम से याकूब की विदाई के बारे में पढ़ते हैं, जिसमें लाबान के साथ बनाई गई शांति की एक वाचा शामिल है। ये निर्णायक अध्याय धोखे और संघर्ष की विविधता की चर्चा करते हैं। लेकिन, जैसा कि हम कुछ देर में देखेंगे, वे याकूब में एक क्रांतिकारी परिवर्तन को लाते हैं।

> जब हम उत्पत्ति 25 – 37 में याकूब की कथा को देखते हैं, हम परिवर्तनों की एक उल्लेखनीय श्रृंखला को पाते हैं जो याकूब के जीवन में हुई। जब वह एक धोखेबाज के रूप में शुरू करता है, तो उसके पास परमेश्वर से अद्‌भुत अनुग्रहकारी प्रकाशन होता है जिसमें परमेश्वर उस धोखे का उल्लेख नहीं करता जिसे याकूब दिया करता था, लेकिन इसके बजाय वह उसके लिए अब्राहम की सभी प्रतिज्ञाओं को फिर से दोहराता है। और जब याकूब परमेश्वर के साथ सौदा करता है तो वह एक सौदागर बन जाता है, यदि परमेश्वर उन प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा, तो वह उसे अपना हिस्सा

> देगा। लेकिन यह कैसा सौदा था क्योंकि परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञाओं को तब पूरा किया जब लाबान के रूप में याकूब ऐसे व्यक्ति से मिलता है जो उससे ज्यादा धोखेबाज था। और जब याकूब अपने जीवन में परमेश्वर की आशीषों का अनुभव करता है, तो यह बहुत स्पष्ट हो जाता है कि अब वह परमेश्वर पर अधिक से अधिक भरोसा करने को तैयार है-कम से कम न्यूनतम मायनों में-इसलिए जब परमेश्वर उसे घर लौटने के लिए कहता है, तो वह ऐसा करने के लिए तैयार है। अंत में, एक धोखेबाज, एक सौदागर हार जाता है जब वह सुनता है कि उसका भाई कई सारे सशस्त्र पुरुषों के साथ आ रहा है। और फिर वह हारा हुआ छुड़ाया जाता है जब परमेश्वर आता है और याकूब कहता है, "यह तेरा आशीर्वाद है जिसकी मुझको जरूरत है-न कि मेरे पिता के, न एसाव के। यह तेरा है! " और अंततः फिर, इस तरह से, उसे ऐसी स्थिति में लाया जाता है जहां वह परमेश्वर पर भरोसा रखने को तैयार और योग्य है और अब उसे छल-कपट वाला बनने की कोई जरूरत नहीं है जो सब काम को फायदा उठाने के लिए करता है।
>
> डॉ. जॉन ओसवॉल्ट

कुलपिता याकूब पर अपने पाठ में इस बिंदु तक, हमने उत्पत्ति की पुस्तक में याकूब के जीवन की संरचना और सामग्री का पता लगाया है। अब हमें अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर बढ़ना चाहिए: अर्थात इन अध्यायों में दिखाई देने वाले प्रमुख विषय।

प्रमुख विषय

दुर्भाग्य से, मसीह के अनुयायी अक्सर ऐसे दिखाते हैं जैसे कि याकूब की कहानी को मूल रूप से व्यक्तिगत विश्वासियों के लिए सीधे उनके निजी जीवनों में लागू करने हेतु लिखा गया था। बेशक, यह बताने के लिए कि व्यक्ति को कैसे रहना चाहिए उत्पत्ति के इस भाग के पास कहने के लिए बहुत कुछ है। लेकिन हमें हमेशा याद रखना होगा कि उत्पत्ति इस उम्मीद के साथ नहीं लिखी गई थी कि औसत विश्वासी व्यक्ति इसे पढ़ सकेगा। केवल प्राचीन इस्राएल के अगुवों के पास पवित्र शास्त्रों तक सीधी पहुंच होती थी। तो, याकूब के जीवन को मुख्य रूप से संपूर्ण इस्राएल देश से संबंधित मामलों को संबोधित करने के लिए लिखा गया था। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में अपना राज्य बनाने के लिए एक मिशन के रूप में इस्राएल की स्थापना की थी। और वहां से उन्हें पृथ्वी की छोर तक उसके राज्य को फैलाना था। और राज्य-निर्माण का यह मिशन प्राचीन इस्राएल के लिए और आपके और मेरे लिए जो आज मसीह के राज्य में रहते हैं याकूब के जीवन के प्रमुख विषयों की पहचान करने में हमारी मदद करता है।

अब्राहम के जीवन पर हमारे पाठों में, हमने देखा कि मूसा ने चार मुख्य विषयों पर जोर दिया था: अब्राहम के लिए परमेश्वर का अनुग्रह, परमेश्वर के प्रति अब्राहम की विश्वासयोग्यता, अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषें और अब्राहम के माध्यम से दूसरों के लिए परमेश्वर की आशीषें। ठीक यही विषय फिर से याकूब के जीवन में दिखाई देते हैं। इस कारण से, हम विचार करेंगे कि याकूब के जीवन की कहानी इन चार प्रमुख विषयों पर कैसे जोर देती है। सबसे पहले, हम इस्राएल के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की चर्चा करेंगे; दूसरा, परमेश्वर के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्यता की जरूरत; तीसरा, इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषें; और चौथा, इन अध्यायों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता, इस्राएल के माध्यम से दूसरों को परमेश्वर की आशीषें। आइए उन कुछ तरीकों के साथ शुरू करते हैं जिनमें याकूब की कहानी इस्राएल के लिए परमेश्वर के अनुग्रह पर ध्यान केंद्रित करती है।

इस्राएल के लिए परमेश्वर का अनुग्रह

हम दो तरीकों में इस्राएल के लिए परमेश्वर के अनुग्रह का पता लगाएंगे। एक ओर, हम देखेंगे कि कैसे यह विषय मूसा के वास्तविक अर्थ का ध्यान-केंद्रण था, कैसे वह अपने प्राचीन इस्राएली श्रोताओं को प्रभावित करना चाहता था। दूसरी ओर, हम उन तरीकों पर ध्यान देंगे जिनमें ईश्वरीय अनुग्रह के इस विषय को उत्पत्ति के इस भाग के लिए हमारे वर्त्तमान प्रासंगिकता को प्रभावित करना चाहिए। आइए मूसा के वास्तविक अर्थ को पहले देखते हैं।

वास्तविक अर्थ

सामान्य शब्दों में, इस्राएल के लोगों को उनके अपने जीवनों में परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में सिखाने के लिए, मूसा ने याकूब के जीवन में तीन तरीकों से ईश्वरीय अनुग्रह पर जोर दिया था।

अतीत में दिखाया गया अनुग्रह। सबसे पहले, मूसा ने लिखा कि कैसे परमेश्वर ने इससे पहले कि याकूब का जन्म हुआ उसे अतीत वाला अनुग्रह दिखाया था। याकूब की कहानी का प्रारंभिक वृत्तांत इस विषय पर ध्यान आकर्षित करता है। उत्पत्ति 25:23 को फिर से सुनिए जहां परमेश्वर ने रिबका से कहा:

> तेरे गर्भ में दो जातियां हैं, और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के लोग अलग-अलग होंगे, और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे, और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा (उत्पत्ति 25:23)।

रोमियों 9:11-12 में प्रेरित पौलुस ने टिप्पणी की कि इससे पहले कि वह कुछ भी सही या गलत करता याकूब ने परमेश्वर की कृपा को प्राप्त किया था। ठीक इसी तरह, इस्राएल के गोत्रों के लिए भी जो प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर मूसा के पीछे चल रहे थे परमेश्वर का अनुग्रह अतीत में परमेश्वर की कृपा पर आधारित था। व्यवस्थाविवरण 7:7-8 में मूसा ने इसे इस तरह कहा:

> यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया, इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब देशों के लोगों से अधिक थे...। यहोवा ने जो तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से छुड़ा कर निकाल लिया, इसका यही कारण है कि वह तुम से प्रेम रखता है और उस शपथ को भी पूरी करना चाहता है जो उसने तुम्हारे पूर्वजों खाई थी (व्यवस्थाविवरण 7:7-8)।

निरंतर चलते रहने वाला अनुग्रह। दूसरे स्थान पर, मूसा ने याकूब के जीवन में परमेश्वर के उस अनुग्रह रहने वाले अनुग्रह की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला है जो निरंतर प्रकट होता रहता है। इसने इस्राएलियों को सिखाया कि उन्हें अपने जीवनों में परमेश्वर के निरंतर प्रकट होने वाले अनुग्रह की कितनी आवश्यकता थी। यह मुद्दा सबसे पहले उत्पत्ति 25:24-26 में याकूब के जन्म की कहानी में प्रकट होता है। उत्पत्ति 25:26 को सुनिए:

> पीछे उसका भाई अपने हाथ से एसाव की एड़ी पकड़े हुए उत्पन्न हुआ; और उसका नाम याकूब रखा गया (उत्पत्ति 25:26)।

याकूब को उसका नाम इसलिए मिला क्योंकि जब वे पैदा हो रहे थे तो वह ' एसाव की एड़ी पकड़े' हुए था। इब्रानी में याकूब नाम, *יַעֲקֹב* (याखोव), एक ही स्रोत से निकला है जिस शब्द का अनुवाद यहां "एड़ी," या इब्रानी में *עָקֵב* (akeeb) है। परिणामस्वरूप, याकूब के नाम का अर्थ था, "वह एड़ी पकड़ता इब्रानी में *עָקֵב* (याकीब) है। लेकिन, इस मामले में, उसके नाम का अर्थ था उलटना और धोखा क्योंकि याकूब ने बहुत जल्दी ही अपने जन्म के दिन से ही पहलौठे का पद प्राप्त करने की कोशिश की थी। हम यह भी कह सकते हैं कि याकूब के नाम का अर्थ "चालबाज़" जैसा था। यह उत्पत्ति 27:36 में एसाव की प्रतिक्रिया को समझाता है जब याकूब ने इसहाक से एसाव की आशीषों को धोखे से ले लिया था:

> एसाव ने कहा, "क्या नाम याकूब यथार्थ नहीं रखा गया? उसने मुझे दो बार अड़ंगा मारा: मेरे पहिलौठे का अधिकार तो उसने ले ही लिया था, और अब उसने मेरा आशीर्वाद भी ले लिया है!" (उत्पत्ति 27:36)।

याकूब का नाम उसके कामों के बिलकुल अनुरूप है और यहाँ यह साफ कर देते हैं कि उसे अपने जीवन के हर एक दिन में परमेश्वर के निरंतर प्रकट होने वाले अनुग्रह की ज़रूरत है। मूसा अक्सर परमेश्वर के इसी अनुग्रह की ओर ध्यान आकर्षित करता था जो उसके मूल श्रोताओं के लिए विशेष तौर उपयुक्त थे।

उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 26:26-33 में परमेश्वर ने याकूब के पिता, इसहाक को, पलिश्तियों के बीच सुरक्षा देने के द्वारा दया दिखाई थी। जब मूसा ने इन अध्यायों को लिखा, तो इस बात पर जोर डाला कि उसके इस्राएली श्रोताओ को भी पलिश्तियों से अपनी सुरक्षा को दृढ़ करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की ज़रूरत थी। इस के अलावा, 34:1-31 में, परमेश्वर ने अनुग्रहकारिता में कनानियों पर याकूब को जीत दी थी। इस उदाहरण के द्वारा, मूसा के मूल श्रोताओं ने सीखा कि उन्हें अपने दिनों में कनानियों पर जीत पाने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की कितनी जरूरत थी।

भविष्य में प्रकट होने वाला अनुग्रह। तीसरे स्थान पर, याकूब की कहानी परमेश्वर के भविष्य में प्रकट होने वाले अनुग्रह पर भी केंद्रित है। एक बार फिर, हम इस विषय को पहले मूसा की कहानी के आरंभिक वृत्तांत में देखते हैं। जैसा कि आपको याद होगा, उत्पत्ति 25:23 में, याकूब के जन्म से पहले, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी:

> एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे, और बड़ा बेटा छोटे के आधीन होगा (उत्पत्ति 25:23)।

यह प्रतिज्ञा संकेत देती थी कि इस्राएली लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश में इतनी अच्छी तरह से स्थापित हो जाएंगे कि वे अपने शासन का, — और इस तरह परमेश्वर के शासन का — एसाव के वंशजों के देश पर भी विस्तार करेंगे। और भविष्य में होने वाले अनुग्रह की यह प्रतिज्ञा विशेष रूप से मूसा के मूल श्रोताओं के लिए, जब वे अपने ही दिन में एदोमवासियों के साथ सम्बन्ध या लेन – देन करते थे, प्रासंगिक थी।

और परमेश्वर ने याकूब के जीवन की कहानी में भविष्य में प्रकट होने वाले अनुग्रह से जुडी कई अन्य प्रतिज्ञाओं को दिया। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 28:10-22 में, बेतेल में याकूब के सपने में, परमेश्वर ने याकूब को भविष्य के कई अनुग्रह के बारे में आश्वस्त किया था, और बाद में उसने 35:11-12 में, उन्ही सब अनुग्रह की प्रतिज्ञाओं की फिर से पुष्टि की थी जब बेतेल पर याकूब ने परमेश्वर की आराधना किया। याकूब के लिए भविष्य में होने वाले अनुग्रह की इन प्रतिज्ञाओं ने मूसा के श्रोताओं को उस उज्ज्वल भविष्य को दिखाया जिसे परमेश्वर ने उन्हें प्रदान किया था जब वे कनान पर जीत हांसिल करने और उसमें बसने के लिए आगे बढ़ रहे थे।

> यह समझने के लिए कि याकूब की कहानियाँ कैसे इस बात पर ज़ोर देती हैं कि प्रतिज्ञा किए हुए देश पर इस्राएल का अधिकार है, हमें कम-से-कम दो अलग-अलग बातों को याद रखना होगा। एक यह है कि ये कहानियाँ मुख्य रूप से याकूब और एसाव के बीच का विरोधाभास के बारे में है — जैसा कि यह था, अब्राहम की प्रतिज्ञाओं के न्यायोचित उत्तराधिकारी के रूप में, ऐसे समूह जो प्रतिस्पर्धा कर रहे होंगे। और याकूब और एसाव की कहानियाँ, उन दोनों के बीच का विरोधाभास बहुत स्पष्ट रूप से दिखाती हैं कि एसाव दक्षिण में एदोमवासियो की ओर चला गया और परमेश्वर ने उसे वह देश दिया — ऐसा स्थान जहां परमेश्वर ने उसे स्थापित किया — और याकूब, इसके विपरीत, प्रतिज्ञा किए हुए देश के

> लिए अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा का न्यायोचित उत्तराधिकारी ठहरा। लेकिन आप इसे लाबान की कहानी में भी इसे पा सकते हैं खास तौर पर जब याकूब उस स्थान को छोड़ता है। ये उत्तरी पड़ोसी हैं, उसके रिश्तेदार हैं, लेकिन वह वहां हमेशा के नहीं रुकता पर केवल थोड़े समय के लिए। लेकिन याकूब एसाव, और याकूब और लाबान के बीच सिर्फ इन विषमताओं से ज़्यादा महत्वपूर्ण, यह तथ्य है कि जब याकूब प्रतिज्ञा किया हुआ देश छोड़ कर जा रहा है, अपने पिता को धोखा देने, अपने भाई को धोखा देने के बाद; अब वह प्रतिज्ञा किए हुए देश को छोड़ रहा है। 28वे अध्याय में, बेतेल पर उसे वह प्रसिद्ध स्वप्न आता है जहां वह परमेश्वर को पाता है और स्वर्गदूत उसके पास आ रहे हैं और फिर याकूब कहता है, "क्या तु मुझे विश्वास दिला सकता है कि मैं इस देश में वापस लौटने जा रहा हूँ?" और परमेश्वर उसे विश्वास दिलाता है कि वह वैसा ही करेगा। और फिर अध्याय 35 में, आपको वह घटना स्मरण होगी जहां परमेश्वर कहता है, "बेतेल को जा; एक वेदी बना। उस जगह पर एक वेदी बना जहां मैंने तुझसे कहा था कि मैं तुझे वापस ले आऊंगा।" और बेतेल, जैसा कि हम जानते हैं, प्रतिज्ञा किए हुए देश में है। और याकूब के जीवन में ये दोनों घटनाएं इस विचार पर सकारात्मकता रीति से जोर देते हैं कि यही वह देश है जिसे परमेश्वर ने याकूब को उसके सभी अवगुणों के बावजूद दिया था, इसके बावजूद कि उसने अपने भाई को धोखा दिया, अपने पिता को धोखा दिया, यहां तक कि लाबान के देश में ऐसे काम किए जो संदिग्ध थे। इन सबके बावजूद, परमेश्वर ने ऐसे व्यक्ति के रूप में याकूब को चुना जो उस देश का उत्तराधिकारी होगा, जिसकी प्रतिज्ञा उसके पूर्वज अब्राहम से की गई थी।
>
> डॉ. रिचर्ड एल. प्रैट, जूनियर

अब जब कि वास्तविक अर्थ को ध्यान में रखकर हमने इस्राएल के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को देख लिया है, आइए उन कुछ तरीकों पर ध्यान करते हैं जिसके द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह को याकूब की कहानी के द्वारा वर्तमान में लागू किया जाना चाहिए।

वर्तमान प्रासंगिकता

बेशक, मसीह के अनुयायियों के रूप में परमेश्वर के अनुग्रह को अपने जीवनों में लागू करने के अनगिनत तरीके हैं। लेकिन सुविधा के लिए, हम मसीह के राज्य के आरम्भ , पूरे कलीसियाई इतिहास में उसके राज्य की निरंतरता, और महिमा में उसकी वापसी पर राज्य की परिपूर्णता के संदर्भ में विचार करेंगे। मसीह के राज्य के ये तीन चरण उन कुछ प्रमुख तरीकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें नया नियम मसीह के अनुयायियों को अपने जीवन में अतीत के , वर्तमान के और भविष्य के परमेश्वर के अनुग्रह को खोजना सिखाता है।

पहले स्थान पर, मसीह के अनुयायियों के रूप में, जब हम याकूब के जीवन में अतीत काल के अनुग्रह के प्रदर्शन को देखते हैं, तो हमें याद करना चाहिए कि कैसे परमेश्वर ने मसीह में होकर अतीत में भी अपने अनुग्रह को विशेष रूप से उसके राज्य के आरम्भ में प्रकट किया था, सिर्फ हमारे लिए। मसीह का पहला आगमन अनुग्रह के लम्बे इतिहास के अंत में खड़ा है जो कि पूरे पुराने नियम में पाया जाता है। और जैसे कि रोमियों 5:20 जैसे पद संकेत देते हैं, कि परमेश्वर ने मसीह के पहले आगमन में पहले से कहीं अधिक अनुग्रह और दया दिखाई थी। जैसा कि पौलुस ने लिखा है:

> जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ (रोमियों 5:20)।

दूसरे स्थान पर, याकूब के जीवन में परमेश्वर का निरंतर चलते रहने वाला अनुग्रह हमें याद दिलाता है कि हम भी मसीह के राज्य की निरंतरता में चली आ रही उसकी दया को खोजे एवं उस पे निर्भर रहे। जैसा कि इब्रानियों 4:16 जैसे पद हमें बताते हैं, मसीह के अनुयायी "[परमेश्वर के] अनुग्रह के निकट हियाव बांधकर चलें।" और हम देखेंगे कि "जरूरत के समय यही निरंतर बना हुआ अनुग्रह हमारी मदद करेगा।"

और तीसरा, जब हम याकूब के लिए परमेश्वर के आश्वासनों को देखते हैं कि वह भविष्य में भी अनुग्रह करेगा, तो हमें याद रखना चाहिए कि मसीह के राज्य की परिपूर्णता के समय भविष्य में होने वाले परमेश्वर के इसी अनुग्रह को वह हमारे लिए भी प्रकट करेगा। बहुत कुछ वैसा ही जैसे की मूसा के मूल श्रोताओं ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में परमेश्वर के प्रगट होने वाले अनुग्रह के बारे में सुना था। मसीह के अनुयायी नई सृष्टि में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पूरा होते देखने की अभिलाषा करते हैं। इफिसियों 2:7 जैसे पद हमें याद दिलाते हैं कि मसीह की वापसी पर हम "[परमेश्वर के] अनुग्रह के अतुलनीय धन" का अनुभव करेंगे।

परमेश्वर के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्यता

अब जब कि हमने इस्राएल के लिए परमेश्वर के अनुग्रह विषय का अध्ययन कर लिए है, तो आइये हम अब दूसरे प्रमुख विषय की ओर बढ़ते है, अर्थात: परमेश्वर के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्यता की जरूरत। पुराना और नया नियम दोनों स्पष्ट करते हैं कि अनंत उद्धार पूरी तरह से केवल परमेश्वर के अनुग्रह से प्रदान किया जाता है। कोई भी व्यक्ति कभी भी कार्यों के द्वारा उद्धार हासिल नहीं कर पाया है। लेकिन पवित्र शास्त्र भी यह स्पष्ट करता है कि जब लोग परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह को प्राप्त करते हैं, तो परमेश्वर का आत्मा उन्हें बदलना शुरू कर देता है, और वे परमेश्वर द्वारा दिखाई गयी अत्यंत दया के लिए हार्दिक आभार प्रगट करते है तथा उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहते हैं। यह हमारे भीतर परमेश्वर की आत्मा का फल है। जब हम याकूब के जीवन में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता के विषय को देखते हैं, तो हमें हमेशा इन बुनियादी बाइबलीय धर्मविज्ञान के दृष्टिकोणों को ध्यान में रखना चाहिए।

यह देखने के लिए कि हमारा क्या तात्पर्य है, हम मूसा के मूल अर्थ के एक पहलू के रूप में परमेश्वर के लिए इस्राएल की विश्वासयोग्यता को देखेंगे और फिर इस विषय के वर्तमान प्रासंगिकता की ओर जायेंगे। आइए पहले मूसा के वास्तविक अर्थ को देखते हैं।

वास्तविक अर्थ

सामान्य शब्दों में, मूसा ने अपने दिनों में अपने मूल श्रोताओं को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, याकूब द्वारा परमेश्वर के प्रति प्रदर्शित की की वफादारी पर ज़ोर दिया था। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण पेश करते हुए उसने दर्शाया कि परमेश्वर ने याकूब को अपने विश्वासयोग्य दास के रूप में कैसे बदल दिया। याकूब की कहानी के शुरुआती भागों में कुलपिता याकूब को काफी हद तक नकारात्मक प्रकाश में चित्रित किया गया है। पवित्र शास्त्र याकूब के जन्म को अपने भाई की एड़ी पकड़े हुए चित्रित करता है, और इस प्रकार पहिलौठेपन के अधिकार को हड़पने की कोशिश कर रहा है। अपने युवास्था में, हम पढ़ते हैं कि याकूब ने एसाव की भूख का लाभ उठाकर उसके पहिलौठेपन का अधिकार ले लिए था। एसाव के लिए आरक्षित आशीर्वाद को पाने के लिए उसने अपने वृद्ध पिता को भी धोखा दिया। इस शुरुआती नकारात्मक चित्रण का एकमात्र अपवाद बेथेल में याकूब की वह प्रतिज्ञा है जहां उसने शपथ ली कि यदि परमेश्वर उसकी रक्षा करेगा, तो यहोवा उसका परमेश्वर होगा।

अब, इस प्रतिज्ञा के बाद याकूब लाबान के साथ रहने को चला गया। ज़ाहिर है, कि बेतेल में परमेश्वर के लिए वफादारी का बीज जो याकूब के दिल में बोया गया वह लगातार बढ़ता ही गया होगा। अपने ससुर के द्वारा दुर्व्यवहार किए जाने के बावजूद, जब याकूब लाबान के साथ अपना समय बिताने के बाद लौटता है, तो वह एक नया मनुष्य बन जाता है।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

मूसा ने इस बदलाव को चार तरीकों से प्रकट किया है। सबसे पहले, मूसा ने बताया कि याक़ूब ने एसाव की ओर पछतावा प्रकट किया। 32:4-5 में, याक़ूब ने अपने नौकर को अपनी ओर से एसाव को "मेरे प्रभु" के रूप में संबोधित करने का निर्देश दिया। और जब याक़ूब स्वयं उत्पत्ति 33:8 में अंततः एसाव से मिला, तो उसने उसे सीधे "मेरे प्रभु" कह कर संबोधित किया।

दूसरा, याक़ूब ने परमेश्वर के प्रति पछतावा प्रकट किया। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 32:10 में याक़ूब ने परमेश्वर के आगे अंगीकार किया:

> मैं सब करूणा और सच्चाई जो तू ने अपने दास को दिखाए एक के भी योग्य तो नहीं हूँ (उत्पत्ति 32:10)।

तीसरा, याक़ूब ने परमेश्वर से एक नया नाम प्राप्त किया। उत्पत्ति 32:22-32 में याक़ूब ने यब्बोक नदी के घाट पर एक स्वर्गदूत के साथ कुश्ती लड़ी। 27वे पद में, याक़ूब ने मूलतः स्वर्गदूत के आगे स्वीकार करके कि उसका नाम याक़ूब था यह अंगीकार किया कि वह एक "चालबाज़" रहा है। लेकिन उत्पत्ति 32:28 में याक़ूब के अंगीकार के लिए स्वर्गदूत ने यह कहकर जवाब दिया:

> तेरा नाम अब याक़ूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध कर के प्रबल हुआ है (उत्पत्ति 32:28)।

बाइबल में कई सारे अन्य नामों की तरह, יִשְׂרָאֵל (इस्राएल) नाम, अपने इतिहास के कुछ बिंदु पर, परमेश्वर के लिए एक प्रशंसा का नाम था, जिसका अर्थ था, "परमेश्वर युद्ध करता है" या "लड़ता है।" यह इब्रानी क्रियाשָׂרָה (सारा) से निकला है, जिसे पद 28 में "तू ने युद्ध किया" के रूप में अनुवाद किया गया है । स्वर्गदूत ने समझाया कि यह नाम याक़ूब के लिए एक विशेष तरीके से लागू किया गया है क्योंकि वह "परमेश्वर से और मनुष्यों से युद्ध कर के प्रबल हुआ [था]।" इस दृश्य में परमेश्वर के साथ याक़ूब का संघर्ष एक वरदान के लिए की जा रही कुश्ती के रूप में दर्शाया गया है। और, सभी संभावना में, मनुष्यों के साथ याक़ूब के संघर्ष एसाव और लाबन के साथ उसके संघर्षों को संदर्भित करते हैं। याक़ूब के जीवन के संदर्भ में उसके नए नाम ने संकेत दिया कि वह एक नया मनुष्य था। चालबाज़ बने रहने के बजाय, याक़ूब "इस्राएल" बन गया था, वह जिसने युद्ध किया और प्रबल हुआ था।

> आपने उत्पत्ति की पुस्तक में याक़ूब के नाम को स्वयं परमेश्वर द्वारा इस्राएल में बदले जाने की दिलचस्प कहानी को पढ़ा। याक़ूब ने स्वर्गदूत के साथ मल्लयुद्ध किया था और उसने एहसास किया कि स्वर्गदूत परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता था; वह परमेश्वर का स्वर्गदूत था। और वह महसूस करता है कि परमेश्वर के पास उसके लिए एक विशेष योजना थी। परमेश्वर ने उस पर ध्यान दिया था, उससे मिलने आया था, उसके लिए परमेश्वर के पास एक उद्देश्य था जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण था। और इस तरह, उसे अपना नाम बदला हुआ मिला... । प्राचीन इस्राएल में, हम जानते हैं कि लोग बच्चों के नाम नहीं रखते थे जब तक कि वे पैदा न हो जाएं। वे उनका नाम पहले ही से नहीं रखते थे। वे नहीं कहते थे, यदि लड़का हुआ तो हम उसे यह नाम देंगे, और अगर यह एक लड़की हुई तो हम उसे वह नाम देंगे। इसके बजाय, वे क्या करते थे कि किसी तरह के संकेत के लिए इंतजार करते थे, किसी तरह का संकेत, किसी तरह का लक्षण। अब, यह याक़ूब के साथ हुआ था जब वह पैदा हुआ था क्योंकि जब वह गर्भ से बाहर आया तब वह अपने भाई एसाव की एड़ी को पकड़े हुए था- - इसलिए, उसे इब्रानी में वह नाम मिल गया, "याकोव", जिसका मतलब है कि "एड़ी लगाने वाला" या "एड़ी को पकड़ने वाला," या "एड़ी के जैसा व्यक्ति।" और वह उसे अपने पूरे जीवन भर लेता फिरा.. । लेकिन जब परमेश्वर उससे मिला तो वह वास्तव में एक नया व्यक्ति था। जब

> परमेश्वर ने याकूब को पकड़ लिया और उसके सामने अपने वास्तविक उद्देश्य को प्रकट किया, कि वह एक राष्ट्र का पिता होगा, अपने पिता इसहाक या अपने दादा अब्राहम से भी अधिक प्रत्यक्ष तरीके से, — एक बहुत ही प्रत्यक्ष तरीके से... और इसलिए याकूब से इस्राएल बनने के द्वारा आया वह परिवर्तन वास्तव में एक सुंदर बात है और हम इसमें परमेश्वर की भूमिका की सराहना करते हैं, इस्राएल के राष्ट्र के निकटतम पिता को अपनी सेवा के लिए बुलाने में और उन बच्चों को पैदा करने में जिन्हें वह पृथ्वी पर अपने पहले लोगों के रूप में उपयोग करेगा।
>
> डॉ. डगलस स्टुअर्ट

मूसा के मूल श्रोताओं के लिए याकूब के नए नाम के महत्व को ज़्यादा समझना मुश्किल होगा। "इस्राएल" उन बारह गोत्रों का राष्ट्रीय नाम था जिनकी अगुवाई मूसा ने मिस्र से प्रतिज्ञा किए हुए देश तक की थी। जब उन्होंने परमेश्वर के निष्ठावान सेवक के रूप में कुलपिता के नए नाम के बारे में सुना, तो उन्हें याद दिलाया गया था कि, इस्राएल होने के नाते, उन्हें ठीक याकूब की तरह संघर्ष करने और प्रबल होने के लिए बुलाया गया था।

लाबान के साथ अपने समय के बाद, याकूब का चौथा, सकारात्मक चित्रण था, उसकी सच्ची उपासना जब वह बेतेल लौटा था। जिस तरह उसने उत्पत्ति 28:20-21 में बेतेल पर परमेश्वर के प्रति विश्वासी बने रहने की प्रतिज्ञा की थी, उसी तरह याकूब ने उत्पत्ति 35:3 में एक वेदी बनाई और बेतेल में पूरी ईमानदारी से यहोवा की उपासना की।

याकूब के परिवर्तन की मूसा की कहानी में उसके मूल श्रोताओं के लिए दो मुख्य शिक्षाएं थी । उसने याकूब की निष्ठाहीनता को इसलिए पेश किया क्योंकि उसके श्रोताओं को उन कई बातों का सामना करने की ज़रूरत थी जिनमें वे परमेश्वर के खिलाफ़ निष्ठाहीन रहे थे। लेकिन उसने अपने श्रोताओं को उसके दिनों में याकूब में पाए जाने वाले विश्वास का अनुकरण करने के लिए प्रोत्साहित किया और याकूब को परमेश्वर के वफादार सेवक के रूप में भी पेश किया था। और जब मूसा के मूल श्रोता प्रतिज्ञा किए हुए देश में जीवन की चुनौतियों का सामना कर रहे थे तो जितना ज्यादा उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा करने की आवश्यकता थी, उतना ही उन्हें परमेश्वर के प्रति निष्ठावान सेवा के लिए स्वयं को अर्पण करने की आवश्यकता थी।

अब जबकि हमने मूसा के मूल अर्थ के संबंध में परमेश्वर के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्यता के विषय देख लिया है, तो अब हमें इस विषय को याकूब के जीवन से प्राप्त हुई शिक्षा जिसे हम वर्तमान में अपने जीवन पर लागु कर सकते है, के रूप में देखना चाहिए। अपने उद्देश्यों के लिए, एक बार फिर से हम देखेंगे कि याकूब के जीवन के यह आयाम कैसे हम पर भी मसीह के राज्य के आरम्भ , निरंतरता, और परिपूर्णता के संदर्भ में लागू होता है।

वर्तमान प्रासंगिकता

पहले स्थान पर, जब कभी याकूब के जीवन का वृत्तांत हमारे विचारों को परमेश्वर के प्रति वफादार बने रहने की हमारी जिम्मेदारी की ओर हमें ले जाता है, तो हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कैसे मसीह ने अपने राज्य के आरम्भ में सभी धार्मिकता को पूरा किया। इब्रानियों 4:15 हमें बताता है कि मसीह की परीक्षा हमारे जैसे ही हुई थी, लेकिन उसने कभी पाप नहीं किया। वास्तव में, परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति मसीह इतना विश्वासयोग्य था कि वह परमेश्वर के न्याय के अधीन होकर स्वेच्छा से उन सब के लिए क्रूस पर मर गया जो उस पर विश्वास करते हैं। और उसकी सिद्ध धार्मिकता अब हम पर विश्वास के द्वारा प्रत्यारोपित की गई है। अपने राज्य के आरम्भ में परमेश्वर के प्रति स्वयं मसीह की व्यक्तिगत विश्वासयोग्यता हमें याकूब के जीवन के निर्देशों को मात्र नैतिक रूप में लागु करने से रोकती है

— "ऐसा करो; ऐसा मत करो।" याकूब के जीवन के प्रत्येक नैतिक निहितार्थ को पहले हमारी ओर से मसीह के द्वारा पूरी की गयी धार्मिकताके के संदर्भ में देखा जाना चाहिए।

दूसरे स्थान पर, जब हम याकूब की कहानी में वफादारी के विषय को देखते हैं, तो हम आज मसीह के प्रति अपनी सेवा को निष्ठा के साथ पूरी करने लिए मार्गदर्शन पाते हैं। मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान, याकूब का जीवन आज भी हमें परमेश्वर के प्रति अपनी वफादारी पर विचार करने की बुलाहट देता है। हमें इब्रानियों 12:1-2 जैसे पद हमें याकूब समेत, उन सब लोगो के, जो हम से पहले रहे है, विश्वास का अनुकरण करने को प्रोत्साहित करता है।

और तीसरे स्थान पर, याकूब की कहानी का प्रत्येक पहलू जो मनुष्य की विश्वासयोग्यता की आवश्यकता के विषय को छूता है, हमारे दिलों को परमेश्वर के राज्य की परिपूर्णता के समय मसीह के प्रति वफादारी दिखाने की तरफ लेकर जाना चाहिए। विश्वासयोग्यता का विषय हमें याद दिलाता है कि हम जो मसीह का अनुसरण करते हैं एक दिन परमेश्वर के सिद्ध, विश्वासयोग्य सेवकों में बदल दिए जाएंगे। जैसा कि 1 यूहन्ना 3:2 जैसे पद सिखाते हैं, जब मसीह लौटेगा, "हम उसके समान होंगे।"

> यह देखकर कि याकूब को परमेश्वर ने आशीष देने की प्रतिज्ञा की थी, हम याकूब की कहानियों को आज अपने जीवनों में लागू कर सकते हैं। यह परमेश्वर का वचन था जिसने प्रतिज्ञा की थी कि उसने याकूब से प्रेम किया था, फिर भी, याकूब किसी भी तरह उन आशीषों को, जिसे पहले ही देने प्रतिज्ञा परमेश्वर ने कर दी थी, प्राप्त करने अपना अधिकांश जीवन बिताता है। इस तरह, हम भी अक्सर याकूब के समान होते हैं। हम कभी-कभी किसी भी क़ीमत पर जीवन में लाभ प्राप्त करने की कोशिश करते हैं—— वह चीज़ जिसे देने का वादा परमेश्वर ने पहले ही हमसे कर दिया है, वास्तव में, वह हमें मसीह में पहले ही दे दिया गया है। इस बात को रोमियों 8:32 से अच्छा शायद ही नए नियम में कोई पद बोलता होगा: "यदि परमेश्वर ने अपने निज पुत्र को भी न छोड़ा, वह उसके साथ हमें सब कुछ क्योंकर न देगा?" मसीह के माध्यम से हम विशेष रूप से भजन 46 के वचनों को सुन सकते हैं: "चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूँ," और — यदि मैं एक लाईन जोड़ सकता — जान लो कि वह भला परमेश्वर है, जिसका स्वभाव दयालु और झुकाव वाचा के द्वारा अपनाये गए अपने बच्चों की ओर रहता है।
>
> -रेव्ह. माइकल जे. ग्लोडो

इस्राएल के लिए परमेश्वर के अनुग्रह और परमेश्वर के प्रति इस्राएल की वफादारी के प्रमुख विषयों को देख लेने के बाद, हमें उत्पत्ति के इस भाग में तीसरे प्रमुख विषय की ओर बढ़ना चाहिए: इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषें।

इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषें

हम इस्राएल के लिए परमेश्वर के आशीषों की जांच उसी तरह करेंगे जिस तरह हमने मूसा के अन्य विषयों का पता लगाया था। हम मूसा के वास्तविक अर्थ के संदर्भ में पहले सोचेंगे, और फिर हम इस विषय के हमारे वर्त्तमान प्रासंगिकता पर विचार करेंगे। आइए मूसा के वास्तविक अर्थ के साथ शुरू करते हैं।

वास्तविक अर्थ

सामान्य शब्दों में, अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचाओं में आज्ञाकारिता के लिए आशीषें और अनाज्ञाकारिता के लिए शाप शामिल होते है। इसमें कोई शक नहीं कि याकूब ने अपनी अनाज्ञाकारिता

करने के द्वारा जीवन में कई नकारात्मक परिणामों का अनुभव किया था। उदाहरण के लिए, अपने भाई और पिता को धोखा देने के बाद, याकूब को अपनी जान के लिए भागना पड़ा। उसने अपने ससुर, लाबान के द्वारा भी कठिन समय का अनुभव किया था।

लेकिन मूसा ने साफ तौर पर उन आशीषों पर ज़्यादा ज़ोर दिया जो परमेश्वर ने याकूब को दी थी ताकि वह अपने मूल श्रोताओं को याद दिलाए कि परमेश्वर ने उन्हें भी कई आशीषों को दिया था। याकूब के जीवन में परमेश्वर का आशीषें मोटे तौर पर दो समूहों में बंटी हैं: याकूब की अनाज्ञाकारिता के बावजूद आने वाली आशीषें और याकूब की आज्ञा मानने के परिणामस्वरूप आने वाली आशीषें।

एक ओर, याकूब ने अपनी निष्ठाहीनता के बावजूद आशीषों को प्राप्त किया। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 27:27-29 में याकूब ने इसहाक के माध्यम से परमेश्वर की आशीष प्राप्त की थी भले ही उसने वह इसहाक को धोखा देकर हासिल की हो। याकूब ने 28:13-15 में बेतेल में परमेश्वर की आशीषों को इस तथ्य के बावजूद कि वह एसाव से अपनी जान बचा कर भाग रहा था, प्राप्त किया था ।

दूसरी ओर, याकूब की कहानी के बाद के खण्डों में, परमेश्वर की आशीषें याकूब की वफादारी के परिणामस्वरूप आती हैं। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 29:1 – 31:55 में, परमेश्वर ने लाबान के माध्यम से याकूब को परिवार और धन-दौलत की आशीषें दी थीं। याकूब द्वारा स्वयं को दीन करने के बाद, उत्पत्ति 32:1 – 33:17 में परमेश्वर ने उसे एसाव के माध्यम से आशीषें दी। इसी तरह, उत्पत्ति 33:18 – 34:31 में उसके बेटों द्वारा कनानियों से संघर्ष करने के बाद याकूब ने शकेम में परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त किया। जब कुलपिता याकूब ने स्वयं को परमेश्वर की उपासना के लिए समर्पित कर दिया, तब परमेश्वर ने 35:9-13 में बेतेल में याकूब को आशीष भी दी।

मूसा जानता था कि जो इस्राएली लोग उसके पीछे प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर चल रहे हैं उन्हें पलायन और विजय में कई मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। इसलिए, इन और कई अन्य पदों में, मूसा ने याकूब को मिलने वाली परमेश्वर की आशीषों पर ध्यान केंद्रित किया ताकि वह अपने मूल श्रोताओं को कृतज्ञ बनने के लिए प्रेरित करे और परमेश्वर की आशीषों को और बढ़कर पाने हेतु प्रोत्साहित करे। एक बार जब हम इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषों के बारे में पढ़ते और उसके वास्तविक अर्थ को देखते हैं, तो वर्तमान प्रासंगिकता के लिए इन बातों के महत्व को समझना मुश्किल नहीं है।

वर्तमान प्रासंगिकता

हमारी पहले की गयी चर्चाओं के अनुसार, एक बार फिर हम मसीह के राज्य के आरम्भ , निरंतरता और परिपूर्णता के संदर्भ में बात करेंगे। राज्य के आरम्भ के दौरान हमें सबसे पहले मसीह की ओर स्वयं अपने हृदयों को मोड़ना चाहिए। याकूब ने अपनी अनिष्ठा के बावजूद आशीषों को प्राप्त किया पर, यीशु जो पाप से अंजान था और पिता के प्रति वफादार था, उसने पृथ्वी पर अपने जीवनकाल के दौरान बहुत सी आशीषों को प्राप्त किया और उससे भी महान आशीषें उसको मिली जब वह स्वर्ग में चढ़ गया। यीशु की अपनी आशीषों के बारे में देखने वाली या सबसे उत्कृष्ट बात, इफिसियों 1:3 जैसे वचन हमें सिखाता है, मसीह के साथ एक होने के द्वारा, हम यीशु की आशीषों में सहभागी हैं।

इस के अलावा, नया नियम सिखाता है कि मसीह अपने राज्य की निरंतरता के दौरान अपने लोगों पर आशीषों को बरसाता है। जैसा कि उसने याकूब के साथ किया था, परमेश्वर, कभी-कभी हमारी निष्ठाहीनता के बावजूद और अन्य समयों में हमारी निष्ठा के परिणामस्वरूप हमें आशीष देता है। अब, मसीह के अनुयायियों के लिए यह जीवन स्वयं को इनकार करने और दुख से भरा है। लेकिन 2 कुरिंथियों 1:21-22 और इफिसियों 1:13-14 जैसे पद इस बात को स्पष्ट करते हैं कि परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा की अद्भुत आशीषों के साथ हम में से प्रत्येक पर अपनी छाप लगाने की प्रतिज्ञा की है। आने वाले संसार में इससे भी अधिक विरासत की गारंटी के रूप में पवित्र आत्मा हमारे भीतर और हमारे बीच में रहता है।

इसलिए, जब भी हम उत्पत्ति की पुस्तक में याकूब के लिए परमेश्वर की आशीषों को देखते हैं, तो हमें उन अथाह आशीषों को स्मरण दिलाया जाता है जिन्हें हम मसीह के राज्य की परिपूर्णता पर प्राप्त

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

करेंगे। मत्ती 25:34 जैसे पद इतने स्पष्ट रूप से सिखाते हैं, कि जब मसीह लौटेगा, तो परमेश्वर "सृष्टि की रचना से हमारे लिए तैयार किए गए राज्य" में हमारा स्वागत करेगा।

इस्राएल के लिए परमेश्वर का अनुग्रह, परमेश्वर के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्यता, इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीष के प्रमुख विषयों पर ध्यान देने के बाद, आइए चौथे, और मूसा के द्वारा लिखे गए याक़ूब के जीवन के वृत्तांत के सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख विषय की ओर बढ़ते हैं: इस्राएल के माध्यम से जगत के अन्य लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषें।

इस्राएल के माध्यम से अन्य लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषें

पहले की तरह, हम मूसा के वास्तविक अर्थ के संदर्भ में इस्राएल के माध्यम से परमेश्वर की आशीषों के विषय का पता लगायेंगे और फिर विषय के वर्तमान प्रासंगिकता की ओर बढ़ेंगे। आइए मूसा के वास्तविक अर्थ को पहले देखते हैं।

वास्तविक अर्थ

मूल दर्शकों के लिए इस विषय का क्या महत्व था इस बात को समझने के लिए, हमें इस्राएल देश के पिता के रूप में अब्राहम को दिए गए परमेश्वर के विशेष आदेश को याद करने की आवश्यकता है। उत्पत्ति में अब्राहम की कहानी बताती है कि परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों की नियुक्ति की,कि वे मानवता के मूल आदेश को पूरा करने में अगुवाई करे। उन्हें फलना-फूलना और पृथ्वी को परमेश्वर के विश्वासयोग्य स्वरूप से भरना था। और ऐसा उन्हें परमेश्वर की आशीषों को पृथ्वी भर में दूसरे लोगों तक फैलाने के द्वारा करना था। जैसा कि हम उत्पत्ति 12:2-3 में पढ़ते हैं, परमेश्वर ने अब्राहम से कहा:

> तू आशीष का मूल होगा। और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे। **(उत्पत्ति 12:2-3)**।

यहाँ पर ध्यान दें कि परमेश्वर ने अब्राहम को "संसार के सभी राष्ट्र" तक परमेश्वर के राज्य की आशीषों को फैलाने के लिए बुलाहट दी थी। लेकिन ध्यान दें कि भले ही परमेश्वर की आशीष पूरे पृथ्वी पर फैल जाएगी, लेकिन हर एक व्यक्ति को आशीषित नहीं किया जाएगा। परमेश्वर ने कहा: "जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा, और जो तुझे कोसे उसे मैं शाप दूंगा।" दूसरे शब्दों में, कुछ लोग इस्राएल के प्रयासों का तिरस्कार करेंगे, और दूसरे उन्हें स्वीकार करेंगे। और परमेश्वर ने उसी के अनुसार दूसरों को आशीषित करने और शाप देने की प्रतिज्ञा की।

काफी दिलचस्प बात है, कि आशीष और शाप देने की इसी दोहरी प्रक्रिया को जिसे परमेश्वर ने अब्राहम के सामने प्रकट किया था, उत्पत्ति 27:29 में याक़ूब के लिए भी इसे दोहराया गया जब इसहाक ने याक़ूब को यह कहते हुए आशीष दिया:

> जो तुझे शाप दें वे आप ही शापित हों, और जो तुझे आशीर्वाद दें वे आशीष पाएं **(उत्पत्ति 27:29)**।

याक़ूब के जीवन के बारे में मूसा ने जो कुछ लिखा उसके ज्यादातर हिस्सों में यही दर्शाने का प्रयास किया कि किस तरह से कुलपिता ने अपने दिनों में विभिन्न लोगों के साथ संपर्क किया और उन पर परस्पर प्रभाव डाला था। क्योकिं यह सारे लोग मूसा के समय में आसपास रह रहे लोगों के ही पूर्वज थे जो उन दिनों में इस्राएलियों के साथ संपर्क में आ रहे था। ऐसा करने के द्वारा, मूसा ने इस्राएलियों सिखाया कि उनके संपर्क में आने वाले ये या वो समूह से कैसा बर्ताव करें। क्या उन्हें युद्ध के लिए जाना चाहिए? या उन्हें शांति स्थापित करनी चाहिए?

उदाहरण के लिए, याक़ूब की कहानियाँ प्रतिज्ञा किए हुए देश की सीमाओं के अंदर बसे दो समूहों की चर्चा करती है।

एक ओर, 33:18 – 35:15 में, छठवां भाग याक़ूब और कनानियों के बीच संघर्षों की रिपोर्ट देता है। उत्पत्ति 15:16 में, परमेश्वर ने यह साफ किया कि वह इस्राएल को मिस्र से तब तक बाहर नहीं लाएगा, जब तक "एमोरियों का पाप" कनानियों के लिए दूसरा शब्द —"पूरा नहीं हो जाता।" राहाब जैसे, कुछ अपवादों के साथ, मूसा के दिनों तक कनानियों ने प्रतिज्ञा किए गए देश को इतना अशुद्ध कर दिया था, कि परमेश्वर ने इस्राएल को उन्हें नाश करने की आज्ञा दी। तो, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि मूसा ने याक़ूब द्वारा शकेमवासियों की हार और अन्य कनानियों से याक़ूब की रक्षा के बारे में लिखा।

दूसरी ओर, याक़ूब के जीवन का दूसरा भाग 26:1-33 में इसहाक और पलिश्तियों के बीच संघर्षों को बताता है। कनानियों के साथ याक़ूब के संघर्ष के विपरीत, यह भाग पलिश्तियों के साथ इसहाक की शांति पर ध्यान केंद्रित करता है। हम यहोशू 13:1-5 में पढ़ते हैं कि पलिश्ती लोग उन देशों में रहते थे जिन्हें देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने इस्राएल से की थी। लेकिन उनके नाम से संकेत मिलता है कि पलिश्ती लोग एक समुद्री मल्लाह लोग थे जो कप्तोर से आए थे। इस वजह से, तुरंत ही वे कनानियों के खिलाफ परमेश्वर के न्याय के अधीन नहीं आए थे। इस नीति को उत्पत्ति 21:22-34 में अब्राहम और 26:26-33 में इसहाक के उदाहरणों द्वारा समर्थन मिला है। इन दोनों कुलपिता ने पलिश्तियों के साथ शांति संधियां बनाई थी। जिसके परिणामस्वरूप, पलिश्तियों के साथ शांति से रहने की कोशिश करने के द्वारा मूसा के दिनों में इस्राएलियों ने अब्राहम और इसहाक का अनुकरण किया। इसके बाद ही जब पलिश्तियों ने बाद की पीढ़ियों के द्वारा इस संधि को तोड़ दिया था तब इस्राएल ने उनके खिलाफ युद्ध छेड़ा।

इन उदाहरणों के अलावा, याक़ूब की कहानी उन लोगों से भी संबंधित है जो प्रतिज्ञा किए गए देश से बाहर रहते थे। उदाहरण के लिए, 29:1 – 31:55 में लाबान के साथ याक़ूब के बिताये समय का केंद्रीय भाग इस्राएलियों के दूर के रिश्तेदारों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो पद्दनराम, प्रतिज्ञा किए गए देश के थोड़ा उत्तर में रहते थे। याक़ूब के समय का लेख उस धोखे के खिलाफ चेतावनी देता है जो लाबान और उसके परिवार को चित्रित करता है। लेकिन उत्पत्ति 31:51-55 से पता चलता है कि याक़ूब और लाबान ने दोनों के बीच की भौगोलिक सीमा का सम्मान करने और एक-दूसरे के साथ शांति बनाए रखने की शपथ खाई थी। यह साफ करता है कि मूसा के बाद के इस्राएलियों को उत्तरी सीमा पर अपने रिश्तेदारों के साथ शांति से रहना था। और बाद में इस्राएल को इस स्थान पर भी परमेश्वर के राज्य को फैलाना था।

प्रतिज्ञा किए हुए देश में और उत्तरी सीमा पर रहनेवाले लोगों से व्यावहारिक सम्बन्ध रखने के अलावा, याक़ूब के जीवन की ज़्यादातर कहानी उसके भाई एसाव के साथ होनेवाले संपर्कों पर केंद्रित है। जैसा कि हमने देखा, उत्पत्ति 25:19-34 में भाइयों और राष्ट्रों के बीच संघर्ष की शुरुआत में इस तथ्य पर जोर दिया गया है कि याक़ूब और एसाव के संबंध एदोमवासियों के साथ इस्राएलियों के संबंध का पूर्वाभास था जो सेईर में रहते थे, जो प्रतिज्ञा किए हुए देश की दक्षिणी सीमा में हैं।

उत्पत्ति के मूल श्रोताओं के लिए एदोम विशेष रूप से महत्वपूर्ण था क्योंकि जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ चले थे तो उन्हें एदोमवासियों की शत्रुता का सामना करना पड़ा था। परमेश्वर ने इस्राएलियों को निर्देश दिया था कि वे इस क्षेत्र के अन्य लोगों के साथ युद्ध करें, लेकिन व्यवस्थाविवरण 2:4-6 और गिनती 20:14-21 में, हम पढ़ते हैं कि मूसा ने इस्राएल को विशेष रूप से निर्देश दिया था कि वे अपने रिश्तेदार, एदोमवासियों के साथ नम्रतापूर्वक और शांति से रहें।

याक़ूब की कहानी इस्राएलियों को याद दिलाती थी कि याक़ूब ने परमेश्वर की आशीष को छल से प्राप्त किया था। यह इस बात को भी बताती थी कि याक़ूब ने एसाव के सामने स्वयं को दीन किया था। और इससे भी अधिक, याक़ूब की कहानियों ने याक़ूब और एसाव और उनके वंशजों के शांतिपूर्ण, भौगोलिक विभाजन पर ध्यान केंद्रित किया था। मूसा की कहानी के ये आयाम उसके पीछे चल रहे इस्राएलियों को प्रत्यक्ष तौर पर बता रहे थे कि उन्हें एदोमवासियों के साथ कैसा व्यवहार करना था। यह

बहुत बाद में हुआ, कि जब एदोमवासियों ने इस्राएल को परेशान किया और फिर इस्राएल ने उनके साथ युद्ध किया।

अब जब कि इस्राएल के माध्यम से अन्य लोगों तक आने वाली परमेश्वर की आशीषों के वास्तविक अर्थ को देख लिया है, हमें इस विषय के वर्त्तमान प्रसांगिकता की ओर बढ़ना चाहिए।

वर्त्तमान प्रसांगिकता

इस विषय के पास हमारे जीवनों के लिए कई निहितार्थ है, लेकिन सुविधा के लिए हम मसीह के राज्य के तीन चरणों पर एक बार फिर से ध्यान देंगे। सबसे पहले, अपने राज्य के आरम्भ में, यीशु, इस्राएल का राजा होकर, पृथ्वी पर रहनेवाले सभी लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषों को लेकर आया। यूहन्ना 12:47-48 जैसे पद हमें बताते हैं कि, अपने पहले आगमन में, यीशु, शैतान और उसकी दुष्ट आत्माओं की सेनाओं को हराने के लिए आया था। लेकिन वह पृथ्वी पर हर एक देश के लिए शांति का सन्देश भी लाया था। यीशु और उसके प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने विरोध सहा, मगर उन्होंने धीरज के साथ सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से परमेश्वर के साथ मेल मिलाप का प्रस्ताव रखा। उन्होंने उन लोगों के खिलाफ अंतिम दिन में परमेश्वर के न्यायदंड की चेतावनी भी दी, जिन्होंने सुसमाचार का तिरस्कार कर दिया था।

दूसरा, मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान, कलीसिया की सेवकाई के माध्यम से परमेश्वर की आशीषों का सभी देशों में फैलाना जारी है। मसीह, उसके प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के उदाहरण का पालन करने से, हम उन दुष्ट आत्माओं के खिलाफ लड़ते हैं जो देशों को धोखा देना जारी रखे हुए हैं। जैसा कि 2 कुरिन्थियों 5:20 जैसे पद बताते हैं, हम "मसीह के राजदूत हैं।" हम पूरी दुनिया को परमेश्वर के साथ शांति और मेल मिलाप का सन्देश पहुँचाते है, और साथ में हम अंतिम दिन पर परमेश्वर के न्याय की चेतावनी भी देते है।

तीसरा, दूसरे लोगों के साथ याकूब के संपर्कों को हमें मसीह के राज्य की परिपूर्णता को ध्यान में रख कर लागू करना चाहिए। पुराने नियम के समय, अक्सर जब परमेश्वर यह तय करता था कि अब न्याय-दंड लाने का समय है तब इस्राएल की तरफ से अन्य लोगों को दी गई शांति के प्रस्ताव को वापस ले लिया जाता था। इसी तरह, जब मसीह महिमा में लौटेगा, तब उन सभी राष्ट्रों से, जिन्होंने मसीह और उसके राज्य का विरोध किया था, किसी भी प्रकार के शांति के प्रस्ताव को उनसे पूरी तरह से वापस ले लिया जाएगा। उस समय दुष्ट लोग परमेश्वर के न्याय के अधीन होंगे, लेकिन जैसा कि प्रकाशितवाक्य 5:9-10 जैसे पद हमें बताते हैं, पृथ्वी के हर कोने से अनगिनत लोग जिन्होंने मसीह पर भरोसा किया है, वे परमेश्वर के विश्वव्यापी राज्य में प्रवेश करेंगे।

उपसंहार

इस पाठ के अन्दर, हमने इस बात की खोजबीन की,कि किस तरह मूसा के द्वारा उत्पत्ति की पुस्तक में कुलपिता याकूब के जीवन को प्रस्तुत किया है। हमने देखा है कि कैसे मूसा ने अपने अभिलेख की संरचना और और सामग्री को अच्छी तरह से एकीकृत किया ताकि याकूब का जीवन उन इस्राएलियों के जीवनों को छू सके जो प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर उसके पीछे चल रहे थे। हमने यह भी देखा कि कैसे मूसा के मुख्य विषयों जैसे, इस्राएल के लिए परमेश्वर का अनुग्रह, परमेश्वर के प्रति इस्राएल की वफादारी, इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषें और इस्राएल के माध्यम से परमेश्वर की आशीष, ने, न केवल मूसा के दिनों में इस्राएल देश के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान किया, बल्कि हम मसीह के

अनुयायियों का भी मार्गदर्शन करना आज भी जारी रखा है विशेषकर उनका जो अपने दिनों में परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं।

याकूब की कहानी मसीह पर भरोसा करने वालों के लिए आशा की एक अद्भुत कहानी है। इसने पहले मूसा के मूल श्रोताओं को उनकी असफलताओं और सफलताओं का सामना करने में मदद की थी। और जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर जा रहे थे तब इसने अन्य लोगों के साथ हो रहे उनके संपर्कों का भी मार्गदर्शन किया था। यह आज भी आपका और मेरा मार्गदर्शन वैसे ही कर रहा है। याकूब के जीवन के द्वारा, हमें फिर से यह आश्वाशन मिलता है कि कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की करूणा की पहुंच से बाहर नहीं है। और उन लोगों के सामान जो मसीह के द्वारा जोड़े गए हैं, हमारी कई असफलताओं के बावजूद, हम याकूब से सीख सकते हैं कि जब तक मसीह महिमा में नहीं लौटता तब तक हमें पूरे विश्व में परमेश्वर के राज्य की आशीषों को कैसे फैलाना है।